18-3

1501
10/11

(Hindi) विभाग DEPARTMENT/ मंत्रालय MINISTRY

शाखा BRANCH

मंत्रणा संग्रह
Consultation Collection Proscribed Publication

संख्या
No. 843

दिनांक
Date 940 P

विषय
Subject स्वतंत्रता की लहर

पूर्व निर्देश
Previous reference

बाद का निर्देश
Later reference

2 197448

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY No 843 Date 22.12.71 GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT RECEIVED. 30 MAR 1931

स्वतंत्रता की लहर

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशकः—ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर, मिर्ज़ापुर-सिटी। मूल्य)॥

लाल मुरेठा वालों ने

भारत को गारत कर डाला इन लाल मुरेठा वालों ने।
हम सब की शान मिटा डाला इन लाल मुरेठा वालों ने॥
जिस कुल में जन्म लिया इनने उनही के सर डंडे मारे।
जैचन्द सरिस कुल दल डाला इन लाल मुरेठा वालों ने॥
जिस दम ये लख पाते हैं गोरों का बागी है कोई।
बस चट जेलों में भर डाला इन लाल मुरेठा वालों ने॥
जब गोरे बिल रंखों का जिस दम ये इशारा पाते हैं।
गोली से घायल कर डाला इन लाल मुरेठा वालों ने॥
गोली और तोप मशीनों से भाई का खून बहाते हैं।
कुछ भी न तरस दिल में घाला इन लाल मुरेठा वालों ने॥
भारत में पैदा हो करके भाई पै जुल्म मचाते हैं।
कर दिया मातु का मुंह काला इन लाल मुरेठा वालों ने॥
अब 'शर्म्मा' भाइयो छोड़ गुलामी हममें 'आ' आजद बनो।
नहिं सुना जरा या हकताला इन लाल मुरेठा वालों ने॥

बन्देमातरम्

हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम्।
छीन सकती है नहीं सरकार बन्देमातरम्॥
सर चढ़ोंके सरमें चक्कर उस समय आता ज़रूर।
कान में पहुँची जहाँ झनकार बन्देमातरम्॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार बन्देमातरम्॥
जेल में चक्की घसीटूं भूख से हूं मर रहा।
उस समय भी कह रहा बेजार बन्देमातरम्॥
मौत के मुंह पर खड़ा हूं कह रहा जल्लाद से।
भौंक दे सीने में अब तलवार बन्देमातरम्॥
डाकटरोंने नब्ज़ देखी सर हिला कर कह दिया।
हो गया इसको तो अब आज़ार बन्देमातरम्॥
ईद, होली औ दशहरा, शुबरात से भी सौगुना।
है हमारा लाड़ला त्योहार बन्देमातरम्॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम्॥

हम फरियाद हुए।

भारतवासी बचाओ हम फरियाद भी हुए।
मुमकिन ना मुमकिन सभी इरसाद भी हुए।
दागेसितम् औ सखतिया बेदाद भी हुये।
जरमन की लड़ाई में बरबाद हम हुये॥
हम क्या बतावें किस कदर फरियाद हम हुये।
ये सब हुये पर एक ना आजाद हम हुये॥
जब जर की जरूरत पड़ी तब मैंने जर दिया।
जब सर की जरूरत पड़ी तब मैंने सर दिया॥
हाजत पड़ी बसर की तो मैंने बसर दिया।
खाली थैली इंगलैण्ड की भारत ने भर दिया॥
मुसलिम से कहा गाय की कुरबानी तुम करो।
हिन्दू से कहा चुप क्यों हो जल्दी से लड़ मरो॥
फरमाया पुलिस वालों से कि इन दोनोंको धरो।
मुद्दत से जेल खाली है इन दोनों को भरो॥
सरकार की इन चालों से बरबाद हम हुये।
ये सब हुये पर एक ना आजाद हम हुयें॥

बचाएगा खद्दर

वतन की गुलामी छुड़ाएगा खद्दर।
गरीबों की इज्जत बचाएगा खद्दर॥
हिंदू हैं ताना मुसलमान बाना।
बनावट में लाएगा दोनों को खद्दर॥
कहें गाँधी बाबा जो पहनोगे खद्दर।
तो शीघ्र स्वराज्य दिलाएगा खद्दर॥
छुका लंकाशायर मरा मैनचेश्टर।
विदेशी की धज्जी उड़ाएगा खद्दर॥
जो लोग खद्दर से नफरत करेंगे।
उन्हें भूत बन कर सताएगा खद्दर।

मस्ताना भगतसिंह।

आजादी का दीवाना है मस्ताना भगतसिंह।
बम केश में पकड़ाना ये दीवाना भगतसिंह॥
आलम की एक सान है मस्ताना भगतसिंह।
हम बागी का अरमान है दीवाना भगतसिंह॥
लाहौर का रहने वाला है वो शेरोबबर दिल।
आजादी की थी चाह उसे मस्ताना भगतसिंह॥
देता था लाल परचा वो लाहौर के थानों में।
हो जावो सावधान ये कहता था भगतसिंह॥
होती थी मीटिंग असम्बलीमें जिसदम फेकाबम।
इस केश में पकड़ा गया मस्ताना भगतसिंह॥

गजल

शहर बलीया में गोली चलाई गई।
अत्याचार की धूम माचाई गई॥
सन् तीस चार अगस्त का, यह हाल सुन लीजिए।
महाबीर दल जलूस है अब इसको जाने दीजिए॥
दफा एकसौ चवालीस लगाई गई॥ १॥
आम पबलीक में हुवा बस शोर इस कानून का।
चढ़ रहा था पाप उन पै बेकसों के खून का॥
शान्त प्रजा पै लाठी चलाई गई॥ २॥
जा रही थी भीड़ भारी राष्ट्रीय झंडा लिए।
उस ओर था शैतान का दल हाथ में डंडा लिए॥
पुलिश बालों से लाठी पिटाई गई॥ ३॥
हिन्द के बासी कलेक्टर और हिन्दू जात है।
अपने स्वार्थ के लिए कैसा किया उत्पात है॥
शर्म उनको जरा भी न आई गई॥ ४॥
ईश तू पैदा न कर अब हिन्द में एसे बशर।
जो कलंकित कर रहे हैं मातृ भूमि को निडर॥
इज्जत भारत का खाक मिलाई गई॥ ५॥
देखकर करतूत इनकी डायर की भूली याद है।
ये न कहने को रहा कि बीदेशी ही जल्लाद है॥
खून पबलीक से प्यास बुझाई गई॥ ६॥
सैकड़ो घायल पड़े हैं गोलियों की मारसे।
आशमा तक हिल उठा जालिम के अत्याचार से॥
माता बहनो की इज्जत लुटाई गई॥ ७॥
शान्ति के हम है पुजारी शान्त रहना जानते।
शिर गर कट जाय तो बलीदान अपना मानते॥
कैसी भारत में हलचल मचाई गई॥ ८॥
देवीयां तक कैद हुई जालिम के अत्याचार से।
आर्य्य गंगा सिंह हैं घायल गोलियों की मार से॥
कितनी गोली ये इनपर चलाई गई॥ ९॥

मुद्रकः—कमलाआर्ट प्रेस, मिर्जापुर सिटी।